Chapter-7 विज्ञाननौका

2 MARKS QUESTIONS

1.'तदेव गगनं सैव धरा' कविता संग्रह कस्य कृतिरस्ति?

उत्तरम्:

'तदेव गगनं सैव धरा' कविता संग्रह प्रो. श्रीनिवास रथस्य कृतिरस्ति।

2.अद्य किं ना लोक्यते?

उत्तरम्:

अद्य ज्ञानगङ्गा विलुप्तेति ना लोक्यते।

3. यत्र कुत्रापि शान्तिः समुद्वीक्ष्यते, तत्र किं समायोज्यते?

उत्तरम्:

यत्र कुत्रापि शान्तिः समुद्रीक्ष्यते तत्र विध्वंसबीजं समायोज्यते।

4. अद्य केषां कथा श्रूयते?

उत्तरम्:

अद्य गोपनीयायुधानां कथा श्रूयते।

5.भूतले किं परिक्षीयते?

उत्तरम्:

भूतले जीवरक्षा परिक्षीयते।

6. जीवनाशा कुत्र अनुसन्धीयते?

उत्तरम्:

जीवनाशाऽन्तरिक्षे अनुसन्धीयते।

7. लेखकानुसारेण अद्य किं अस्तं गतम्?

उत्तरम्:

लेखकानुसारेण अद्य विश्वबन्धुत्वदीक्षा गुरुणां व्रतं धर्मसंस्कार तत्वं च अस्तं गतम्।

8. अद्य किं न सञ्चिन्त्यते?

उत्तरम्:

अद्य संस्कृतिज्ञानरक्षा न सञ्चिन्त्यते।

9. इदानीं किं समानीयते?

उत्तरम्:

इदानीं विज्ञाननौका समानीयते।

10. सर्वनाशार्थ किं विद्योतते?

उत्तरम् :

सर्वनाशार्थ विद्यैव विद्योतते।

11. अद्य किं आधीयते?

उत्तरम् :

अद्य तारकायुद्धसंभावना अधीयते।

12.प्रत्यहं किं संलक्ष्यते?

उत्तरम् :

प्रत्यहं दुनिमित्तैव संलक्ष्यते।

4 MARKS QUESTIONS

1.वर्तमान समायोज्यते। अस्य श्लोकस्य अन्वयं कुरुत।

उत्तरम्:

अन्वयः-प्रत्यहं मानवानां कृते वर्तमान स्थितिः दुर्निमित्ता एव संलक्ष्यते। यत्र कुत्रापि शान्तिः समुद्रीक्ष्यते तत्र विध्वंसबीजं समायोज्यते।

2.अधोलिखित पदेषु सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत।

विलुप्तेति, कण्टिकनी + आहिता, प्रत्यहं, बत + अस्तं, अन्तरिक्षे + अनुसंधीयते, यथोपास्यते।

उत्तरम्:

विलुप्ता + इति।

कण्टिकन्याहिता।

प्रति + अहम्

बतास्तम्

अन्तरिक्षेऽनुसन्धीयते।

यथा + उपास्यते।

- संस्कृतोद्यानदुर्वा दिरद्रीकृता
 निष्कुटेषु स्वयं कण्टिकन्याहिता।
 पुष्पितानां लतानां न रक्षा कृता
 विस्तृता वाटिकायोजना निर्मिता॥
- (i) अत्रा का दरिद्रीकृता?
- (ii) निष्कुटेषु का आहिता?

उत्तराणिः

- (i) अत्र संस्कृतोद्यानदुर्वा दरिद्रीकृता।
- (ii) निष्कुटेषु कण्टिकनी आहिता।
- 4. तारकायुद्धसम्भावनाऽधीयते गोपनीयायुधानां कथा श्रूयते। विश्वशान्तिप्रयत्नेषु संदृश्यते विश्वसंहारनीतियथोपास्यते॥ भूतले जीवरक्षा परिक्षीयते
- (i) केषां कथा श्र्यते?
- (ii) जीवरक्षा कुत्र परिक्षीयते?
- (iii) का उपास्यते?

उत्तराणि:

- (i) गोपनीय-आयुधानाम् कथा श्रूयते।
- (ii) जीवरक्षा भूतले परिक्षीयते।

(iii) विश्वशान्तिप्रयत्नेषु संदृश्यते यथा विश्वसंहारनीतिः उपास्यते।

5. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

(निम्नलिखित रेखांकित पदों को देखकर संस्कृत में प्रश्न निर्माण कीजिए)

- (क) अत्र संस्कृतोद्यानदूर्वा दरिद्रीकृता।
- (ख) जनैः अहर्निशं यन्त्रमुग्धान्धता सेव्यते।
- (ग) राजनीतिश्मशानेषु क्रन्दनं न ज्ञायते।
- (घ) भूतले जीवरक्षा परिक्षीयते।

उत्तरम्-

- (क) अत्र का दरिद्रीकृता?
- (ख) जनैः अहर्निशं का सेव्यते?
- (ग) राजनीतिश्मशानेषु किं न ज्ञायते?
- (घ) भूतले का परिक्षीयते?

6. रिक्तस्थानानि पूरयत

- (क) ज्ञानगड्गा नालोक्यते?
- (ख) के कथं कुत्र वा कुर्वते?
- (ग) यत्र कुत्रापि समुद्धीक्ष्यते ।
- (घ) गोपनीयायुधानां श्रूयते।
- (ङ) भूतले परिक्षीयते ।

Sanskrit

उत्तराणि:

- (क) ज्ञानगङ्गा विलुप्तेति नालोक्यते?
- (ख) के कथं कुत्र वा क्रन्दनं कुर्वते?
- (ग) यत्र कुत्रापि शान्तः समुद्धीक्ष्यते।
- (घ) गोपनीयायुंधानां कथा श्रूयते।
- (ङ) भूतले जीवन रक्षा परिक्षीयते ।

7.प्रो॰ श्रीनिवासस्थविरचितस्य अस्य गीतस्य तथैव अधोलिखितस्य अन्यस्य गीतस्यापि अभ्यासः श्रव्य-साधनैः कर्तुं शक्यते

उत्तरमः

अर्थात्-प्रो॰ श्रीनिवासरथ के द्वारा रचे गए इस गीत का जिस प्रकार से श्रव्य साधनों के माध्यम से अभ्यास करते हैं, ठीक वैसे ही निम्नलिखित गीत का अभ्यास कर सकते हैं

जीवनगतिरनुदिनमपरा

तदेव गगनं सैव धरा॥

पापपुण्यविधुरा धरणीयं

कर्मफलं भवताऽऽदरणीयम्।

नैतद्वचोऽधुना रमणीयम्

तथापि सदसद् विवेचनीयम् ॥

7 MARKS QUESTIONS

- 1.संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्
- (क) एषा गीतिका कस्मात् पुस्तकात् संगृहीता?
- (ख) अस्याः गीतिकायाः लेखकः कः?
- (ग) अत्र का दरिद्रीकृता?
- (घ) निष्कुटेषु का आहिता?
- (ङ) वाटिकायोजनायां केषां कासां च रक्षा न कृता?
- (च) राजनीति-श्मशानेषु किं न ज्ञायते?
- (छ) मानवानां कृते वर्तमान स्थितिः कीदृशी संलक्ष्यते?
- (ज) आधुनिकयुगे कस्याः अवलम्बः न चिन्त्यते?
- (झ) विश्वशान्तिप्रयत्नेषु का उपास्यते?
- (अ) जनैः अहर्मिशं का सेव्यते?

उत्तराणि:

- (क) एषा गीतिका 'तदेव गगनं सैव धरा' इति कविता संग्रहात् संगृहीता।
- (ख) अस्याः गीतिकायाः लेखकः प्रो० श्रीनिवासरथः अस्ति।
- (ग) अत्र संस्कृतोद्यान दूर्वा दरिद्रीकृता।
- (घ) निष्कुटेषु कण्टिकन्या (नागफनी) आहिता।
- (ङ) वाटिकायोजनायां पुष्पितानां लतानां संस्कृतोद्यानानां रक्षा न कृता।
- (च) राजनीति-शमशानेषु क्रन्दनं न ज्ञायते।
- (छ) मानवानां कृते वर्तमान-स्थितिः दुर्निमित्ता एव संलक्ष्यते।

Sanskrit

- (ज) आधुनिकयुगे स्वार्थरक्षावलम्बः अपि न चिन्त्यते।
- (झ) विश्वशान्तिप्रयत्नेषु विश्वसंहारनीतिः उपास्यते।
- (अ) जनैः अहर्निशं यन्त्रमुग्धान्धता सेव्यते।

.

2. अधोलिखितपदानां संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत ज्ञानगङ्गा, ज्ञायते, शान्तिः, विद्योतते, संदृश्यते, जीवरक्षा, विक्रीयते। उत्तराणिः

शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
इानगाइ	ज्ञानरूपी गंगा	अस्माकं देशे ज्ञानगड्गा प्रवहति।
ज्ञायते	प्रतीत होता है	के क्रन्दनं कुर्वन्ति इति न ज्ञायते।
शान्ति:	निश्चिन्तता	यत्र कुत्रापि शान्तिः समुद्वीक्ष्यते ।
विध्योतते	दिखाई देता है	सर्वनाशार्थ विधेव विद्योतते ।
संदृश्यते	दिखाई देना	जीवन रक्षायां किं संदृश्यते ?
जीवरक्षा	जीव की रक्षा	पृथिव्यां जीवरक्षा परिक्षीयते।
विक्रीयते	बेचा जा रहा है	अद्य काव्य संकीर्तन विक्रीयतें।

3.संस्कृतोयानदूर्वा दिरद्रीकृता निष्कुटेषु स्वयं कण्टिकन्याहिता। पुष्पितानां लतानां न रक्षा कृता विस्तृता वाटिकायोजना निर्मिता ॥ अस्य श्लोकस्य आशयः हिन्दीभाषया स्पष्टीक्रियताम्

आशयः

प्रस्तुतं श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'विज्ञाननौका' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ श्रीनिवासरथ विरचित 'तदेव गगनं सैव धरा' नामक कविता संग्रह से संकलित है। इस श्लोक में बताया गया है कि वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान के विकास की प्रशंसा की जा रही है। इस दौड़ में भारतीय संस्कृति में वृद्धि को प्राप्त हुए संस्कृत वाङ्मय में निहित अद्वितीय ज्ञान को विस्मृत किया जा रहा है।

जहाँ पिलवत-पुष्पित लताओं की तरह हमारा पोषक ज्ञान है, उसके स्थान पर हमारे जीवन के लिए हानिकारक आणिवक विज्ञान को सिखाया जा रहा है। इसका परिणाम पहले से ही विदित है कि ऐसा होने पर केवल श्मशान भूमि में ही क्रन्दन करना पडेगा। अतः हमें आत्मरक्षा के लिए भारतीय ज्ञान की रक्षा करनी पडेगी।

4. विज्ञाननौका समानीयते
ज्ञानगङ्गा विलुप्तेति नालोक्यते ॥
संस्कृतोद्यानदूर्वा दिरद्रीकृता
निष्कुटेषु स्वयं कण्टिकन्याहिता।
पुष्पितानां लतानां न रक्षा कृता
विस्तृता वाटिकायोजना निर्मिता ॥
के कथं कुत्र वा क्रन्दनं कुर्वते ।
राजनीतिश्मशानेषु न ज्ञायते। विज्ञाननौका......

अन्वय-विज्ञाननौका सम् आनीयते ज्ञानगङ्गा विलुप्ता इति न आलोक्यते। स्वयं-संस्कृत उद्यानदुर्वा दिरद्रीकृता, निष्कुटेषु कण्टिकनी आहिता, पृष्पितानां लतानां न रक्षा कृता, विस्तृता वाटिकायोजना निर्मिता, राजनीतिश्मशानेषु के कथं कुत्र वा क्रन्दनं कुर्वते (इति) न ज्ञायते। विज्ञाननौका समानीयते।

शब्दार्थ-समानीयते = लाई जा रही है। विलुप्ता = लुप्त हो गई है। आलोक्यते = दिखाई दे रही है। दूर्वा = दूब (घास)। निष्कुटेषु = घरेलू उपवनों में, क्रीड़ा उद्यानों में। कण्टिकनी = कैक्टस (नागफनी)। आहिता = लगाई। वाटिकायोजना = बगीचियों का निर्माण। निर्मिता = निर्माण किया गया। राजनीतिश्मशानेषु = राजनीतिरूपी श्मशानों में। क्रन्दनं = रुदन। कुर्वते = करते हैं। ज्ञायते = जाना जाता है। ..

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'विज्ञाननौका' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुविख्यात कवि 'श्रीनिवास रथ' विरचित 'तदेव गगनं सैव धरा' नामक कविता-संग्रह से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस पद्यांश में विज्ञान की ओर बढ़ती प्रवृत्ति तथा प्रकृति की उपेक्षा का चित्रण किया गया है। सरलार्थ-(वर्तमान समय में) विज्ञान रूपी नाव लाई जा रही है तथा ज्ञान रूपी गंगा विलुप्त हो गई है। यह स्थिति देखी नहीं जा रही है। अर्थात् विज्ञान के चलते ज्ञान की ओर प्रवृत्ति दिखाई नहीं दे रही है।

हमने स्वयं संस्कृत रूपी उपवन की दूब (घास) को दिरद्र बना दिया है अर्थात् संस्कृत की उपेक्षा कर रहे हैं। (हमने) अपने घरेलू उपवनों में या क्रीड़ा-उद्यानों में कैक्टस या नागफनी का पौधा लगाया है। फूलों से युक्त लताओं की हमने रक्षा नहीं की और बड़ी-बड़ी बगीचियों का निर्माण कर दिया। राजनीति रूपी श्मशानों में कौन, किसलिए, क्या या कहाँ क्रन्दन कर रहे हैं, यह पता नहीं चलता अर्थात् आधुनिक राजनीति ने श्मशान का रूप धारण कर लिया है। विज्ञान रूपी नाव लाई जा रही है।

भावार्थ भाव यह है कि विज्ञान की चकाचौंध में हम अपने पुरातन ज्ञान एवं सभी भाषाओं की जननी संस्कृत को भूलते जा रहे हैं। आज की राजनीति श्मशान के समान है जिसमें अनेक दल एवं अनेक नेता हैं। कहाँ, कौन, किसलिए अपनी बात कहने जा रहा है, इस बात का पता नहीं चलता। यहाँ सब कुछ अरण्यरोदन के समान हो रहा है। इन पद्यांशों में रूपक अलंकार की छटा प्रशंसनीय है।

5. वर्तमानस्थितिर्मानवानां कृते
प्रत्यहं दुनिमित्तैव संलक्ष्यते।
यत्र कुत्रापि शान्तिः समुद्रीक्ष्यते
तत्र विध्वंसबीजं समायोज्यते॥
सर्वनाशार्थविद्यैव विद्योतते
स्वार्थरक्षावलम्बोऽपि नो चिन्त्यते। विज्ञाननौका......

अन्वय-प्रतिअहं मानवानां कृते वर्तमाना स्थितिः दुःनिमित्ता एव संलक्ष्यते। यत्र कुत्र अपि शान्तिः सम् उद्वीक्ष्यते तत्र विध्वंसबीजं सम आयोज्यते। सर्वनाश-अर्थविद्या एव विद्योतते। स्वार्थरक्षा अवलम्बः अपि नो चिन्त्यते। विज्ञान नौका सम् आनीयते।

शब्दार्थ-प्रत्यहं (प्रति + अह) = प्रतिदिन। दुनिमित्ता = अमांगलिक। संलक्ष्यते = दिखाई दे रही है। समुद्रीक्ष्यते (सम् + उत् + वि + ईश्) = दिखाई दे रही है। विध्वंसबीजम् = विनाश के बीज। समायोज्यते (सम् + आयोज्यते) = बोया जा रहा है। सर्वनाशार्थविद्या = सभीपदार्थीं

का नाश करने वाली विद्या । विद्योतते = चमक रही है। स्वार्थरक्षावलम्बोऽपि = स्वार्थ रक्षा का आश्रय भी।

प्रसंग-प्रस्तुत पद्यांश 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'विज्ञाननौका' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से . आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुविख्यात कवि 'श्रीनिवास स्थ' विरचित 'तदेव गगनं सैव धरा' नामक कविता-संग्रह से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस पद्यांश में आधुनिक सामाजिक परिस्थिति का चित्रण किया गया है।

सरलार्थ-प्रतिदिन मनुष्यों के लिए वर्तमान स्थिति अमांगलिक ही दिखाई दे रही है। जहाँ कहीं भी शान्ति दिखाई दे रही है, वहाँ साथ ही विनाश का बीज बोया जा रहा है। सभी पदार्थों का नाश करने वाली अर्थविद्या (लाभ वाली विद्या) ही चमक रही है। स्वार्थरक्षा का आश्रय भी नहीं सोचा जा रहा है। विज्ञान रूपी नाव लाई जा रही है।

भावार्थ भाव यह है कि आज विज्ञान के चकाचौंध में मनुष्यों की स्थिति दिन-प्रतिदिन चिन्तनीय होती जा रही है। शान्ति स्थापना में विनाश का भाव छुपा है। आज की विद्या ज्ञानदायिनी न होकर अर्थदायिनी हो गई है। मानव समाज का कल्याण किस – प्रकार होगा? इस विषय में कोई भी नहीं सोच रहा है।

6. तारकायुद्धसम्भावनाऽधीयते
गोपनीणयुधानां कथा श्रूयते।
विश्वशान्तिप्रयत्नेषु संदृश्यते
विश्वसंहारनीतियथोपास्यते॥
भूतले जीवरक्षा परिक्षीयते
जीवनाशाऽन्तरिक्षेनुसन्धीयते। विज्ञाननौका......

अन्वय-तारकायुद्धसम्भावना आधीयते, गोपनीयआयुधानां कथा श्रूयते, विश्व शान्ति प्रयत्नेषु संदृश्यते यथा विश्वसंहार नीतिः उपास्यते, भूतले जीवरक्षा परिक्षीयते, अन्तरिक्षे जीवन-आशा अनुसन्धीयते। विज्ञाननौका समानीयते।

शब्दार्थ-तारकायुद्धसम्भावना = मिसाइलों की लड़ाई की सम्भावना (स्टार वार)। आधीयते = सिखाई जा रही है। गोपनीयायुधानां (गोपनीय + आयुधानाम्) = गोपनीय आणविक अस्त-शस्त्र आदि। विश्वसंहारनीतियथोपास्यते = जैसे विश्व के विनाश की नीति सिखाई जा रही हो। उपास्यते = उपासना की जा रही है। परिक्षीयते = क्षीण हो रही हो। जीवनाशाऽन्तरिक्षेनुसन्धीयते (जीवन + आशा + अन्तरिक्ष + अनुसन्धीयते) = जीवन की आशा आकाश में ढूँढ़ी जा रही है। अनुसन्धीयते = अनुसन्धान किया

प्रसंग-प्रस्तुत पद्यांश 'शाश्वती प्रथमो भागः' के अन्तर्गत 'विज्ञाननौका' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुविख्यात कवि 'श्रीनिवास रथ' विरचित 'तदेव गगनं सैव धरा' नामक कविता-संग्रह से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस पद्यांश में वर्तमान वैज्ञानिक अनुसन्धानों में जीवन की आशा को ढूँढ़ने के विफल प्रयास का वर्णन किया गया है।

सरलार्थ-आज मिसाइलों की लड़ाई की संभावना सिखाई जा रही है। गोपनीय आणविक अस्त-शस्त्र की कहानी सुनी जा रही है। विश्वशान्ति के प्रयत्नों को दिखाया जा रहा है किन्तु विश्व संहार की नीतियों का पाठ पढ़ाया जा रहा है। पृथ्वी पर प्राणियों की रक्षा क्षीण हो रही है और आकाश में जीवन की आशा ढूँढ़ी जा रही है। विज्ञान रूपी नौका लाई जा रही है।

भावार्थ भाव यह है कि मिसाइलों और आणविक आयुधों का प्रयोग, विश्वशान्ति के प्रयास, अन्तरिक्ष में जीवन के आशा की . खोज तथा प्राणियों के रक्षा आदि के प्रयास में भी वस्तुतः इनका विनाश ही निहित है। अतः विज्ञान को छोड़कर (प्रकृति की ओर गमन ही श्रेयस्कर है।)

7. विश्वबन्धुत्वदीक्षागुरूणां व्रतं धर्मसंस्कारतत्त्वं बतास्तं गतम्। लोककल्याणशिक्षासमाराधनं हन्त! विक्रीयते काव्य-सङ्कीर्तनम्॥ यन्त्रमुग्धान्धताऽहर्निशं सेव्यते संस्कृतिज्ञानरक्षा न सञ्चिन्यते। विज्ञाननौका......

अन्वय-बत विश्वबन्धुत्वदीक्षा, गुरुणां व्रतं धर्मसंस्कारतत्वम् अस्तं गतम्। हन्त्! लोककल्याणशिक्षा समाराधनं काव्यसङ्कीर्तनं विक्रीयते! अहर्निशं यन्त्र मुग्धान्धता सेव्यते, संस्कृतिज्ञानरक्षा न सञ्चिन्यते। विज्ञाननौका समानीयते।

शब्दार्थ बत = खेद है। विश्वबन्धुत्वदीक्षा = भाईचारे की दीक्षा। अस्तंगतम् = डूब गई, समाप्त हो गई। हन्त = हाय। लोककल्याणशिक्षासमाराधनम = लोककल्याणकारी शिक्षा की आराधना। विक्रीयतें = बेचा जा रहा है। अहर्निशम = दिन-रात। यन्त्रमुग्धान्धता = यन्त्रों के मोह का अन्धकार। सञ्चिन्त्यते = सोचा जा रहा है। संस्कृतिज्ञानरक्षा = संस्कृति और ज्ञान की रक्षा।

प्रसंग प्रस्तुत पद्यांश 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'विज्ञाननौका' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से आधुनिक संस्कृत साहित्य के सुविख्यात कवि 'श्रीनिवास स्थ' विरचित 'तदेव गगनं सैव धरा' नामक कविता-संग्रह से संकलित है। ..

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में विज्ञान जगत् की प्रगति में विश्वबन्धुत्व लोककल्याण संस्कृति तथा ज्ञान के विनाश को देखकर कवि चिन्तित है।

सरलार्थ अत्यन्त खेद की बात है कि आज विश्व में भाईचारे की दीक्षा, गुरुओं का व्रत तथा धार्मिक संस्कार के तत्त्व समाप्त हो गए हैं। अफसोस की बात है कि आज लोककल्याण के शिक्षा की आराधना और काव्य का संकीर्तन (गायन) बेचा जा रहा है। के मोह से अन्धकार का सेवन किया जा रहा है। संस्कृति तथा ज्ञान की रक्षा के विषय में बिल्कुल ही नहीं सोचा जा रहा है। विज्ञान रूपी नाव चलाई जा रही है।

भावार्थ भाव यह है कि आज विश्वबन्धुत्व की भावना, गुरुओं का व्रत, धर्मसंस्कार का तत्त्व, लोकहित शिक्षा की आराधना, काव्य का पठन-पाठन, संस्कृति एवं ज्ञान की रक्षा आदि श्रेष्ठ तत्त्वों की ओर किसी का ध्यान नहीं है। कोई भी इन उच्च आदर्शों के विषय में नहीं सोचता। वैज्ञानिक यन्त्रों के मोह का अन्धकार ही सब तरफ दिखाई दे रहा है।

8.विज्ञाननौका (वाणी (सरस्वती) का वसन्त गीत) Summary in Hindi

प्रस्तुत पाठ 1933 में पुरी (उड़ीसा) में जन्मे किव प्रो॰ श्रीनिवास रथ द्वारा रिचत किवता-संग्रह 'तदेव गगनं सैव धरा' से संगृहीत है। श्रीनिवास रथ बाल्यकाल से मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों में रहे तथा अपने पिता से पारम्परिक पद्धित द्वारा संस्कृत का अध्ययन करने के पश्चात् उच्च शिक्षा इन्होंने काशी-हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राप्त की। ये विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में संस्कृत विभाग में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष रहे। प्रायः 40 वर्षों से ये संस्कृत में गीत लिखते आ रहे हैं। इनके गीतों का उपर्युक्त संग्रह हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत पाठ में आधुनिक विश्व में यान्तिकता और कृत्रिमता के प्रति बढ़ते हुए मोह से सचेत किया जा रहा है कि जीवन मूल्यों को भुलाकर नई भौतिक तकनीकी से मानव को अभिभूत नहीं होना चाहिए।

MULTIPLE CHOICE QUESTIONS

अधोलिखित दश प्रश्नानां प्रदत्तोत्तरविकल्पेषु शुद्धविकल्पं लिखत (निम्नलिखित दस प्रश्नों के दिए गए विकल्पों में से शुद्ध विकल्प लिखिए)

1. जनैः अहर्निशं का सेव्यते?

- (A) यन्त्रप्रियता
- (B) यन्त्रमुग्धता
- (C) यन्त्ररक्षणता
- (D) यन्त्रमुग्धान्धता

उत्तरम्:(D) यन्त्रमुग्धान्धता

2. अत्र का दरिद्रीकृता?

- (A) संस्कृतोद्यानदूर्वा
- (B) वनोद्यानदूर्वा
- (C) गृहोद्यान
- (D) क्रीडोद्यानदूर्वा

उत्तरम्:(A) संस्कृतोद्यानदूर्वा

3. 'प्रत्यहम्' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति

- (A) प्रत + यहम्
- (B) प्रति + अहम्
- (C) प्रति + हम्
- (D) प्रत्य + हम्

उत्तरम्:(B) प्रति + अहम्

4. 'विलुप्ता + इति' अत्र सन्धियुक्त पदम् अस्ति

- (A) विलुप्ताति
- (B) विलुप्ताइति
- (C) विलुप्तेति
- (D) विलुप्तौति

उत्तरम्:(C) विलुप्तेति

5. 'प्रत्यहम्' अत्र कः समासः?

- (A) तत्पुरुषः
- (B) द्वन्द्वः
- (C) अव्ययीभावः
- (D) कर्मधारयः

उत्तरम्:(C) अव्ययीभावः

6. 'समानीय' इति पदस्य प्रकृति-प्रत्यादि विभागः

7. 'गुरु + षष्ठी + बहु० व०' अत्र निष्पन्न रूपम् अस्ति

- (A) गुरौ
- (B) गुरुवः
- (C) गुरुणाम्
- (D) गुरुनां

उत्तरम्:(C) गुरुणाम्

8. 'प्रति' इति उपपदयोगे का विभक्तिः ?

- (A) प्रथमा
- (B) द्वितीया
- (C) चतुर्थी
- (D) तृतीया

उत्तरम्:(B) द्वितीया

9. 'क्रन्दनं' इति पदस्य पर्यायपदं किम्?

- (A) कोलाहलं
- (B) विलापं
- (C) वर्धनं
- (D) रक्षणं

उत्तरम्:(B) विलापं

10. 'कण्टकानांः' इति पदस्य विलोमपदं किम्?

- (A) सुखानां
- (B) कोमलानां
- (C) पुष्पाणां
- (D) अकोमलानां

उत्तरम्: (C) पुष्पाणां

FILL IN THE BLANKS

निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत (निर्देश के अनुसार रिक्त स्थान को पूरा कीजिए)

- (1) 'कुत्रापि' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति । उत्तराणिः कुत्र + अपि,
- (2) 'विज्ञाननौका' इति पदस्य विग्रहः अस्ति । उत्तराणिः विज्ञानस्य नौका,
- (3) 'गोपनीया युधानाम्' अत्र विशेष्यपदम् अस्ति। उत्तराणि :आयुधानाम्।
- (4) विध्वंसबीजम्' इति पदस्य विशेषणपदम् अस्ति। उत्तराणिः विध्वंस,
- (5) 'भूतले' इति पदस्य विलोमपदम् वर्तते। उत्तराणिः परिदृश्यते.

(6) 'संलक्ष्यते' इति पदस्य पर्यायपदम् वर्तते। उत्तराणिः अन्तरिक्षे।

अधोलिखितपदानां संस्कृत वाक्येषु प्रयोग करणीयः (निम्नलिखित पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए)

(७) प्रत्यहं,

उत्तराणि:प्रत्यहं (प्रतिदिन) अहं प्रत्यहं विद्यालयं गच्छामि।

(8) क्रन्दनं,

उत्तराणि: क्रन्दनं (रोने की आवाज) बालः भयात् क्रन्दनं करोति।

(९) निष्कुटं।

उत्तराणिः निष्कुटं (उद्यान)-निष्कुटं परितः निर्झरौ स्तः।।